

हिन्दी साहित्य में जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ० मनजीत कौर
सहायक प्रवक्त्री (हिन्दी विभाग)
दयानन्द महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत
ईमेल:- tinymanjeet@gmail.com
दूरभाष: 7988684685

संक्षेपिका

साहित्य और जीवन का संबंध अटूट होता है। एक सच्चा साहित्यकार समाज की वास्तविक तस्वीर के साथ-साथ जीवन मूल्यों को भी अपने साहित्य में उतारता है। दूसरी ओर साहित्य मानव जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका अभिनीत करता है। वैदिक काल से लेकर आज तक साहित्य ने मानव जीवन को बड़े गहरे रूप से प्रभावित किया है। साहित्य से मानव का मस्तिष्क तो सशक्त बनता ही है साथ ही वह साहित्य में व्याप्त जीवन मूल्यों को ग्रहण करके अपने जीवन को महान् बना सकता है। साहित्य मानव जीवन को एक नई दिशा प्रदान करता है। मानव जीवन में मूल्यों का विशेष महत्त्व तथा योगदान होता है क्योंकि इन्हीं मूल्यों के आधार पर अच्छे-बुरे या उचित-अनुचित को जांचा-परखा जा सकता है। मानव जीवन में मूल्यों की शिक्षा परिवार से ही आरंभ होती है। इसके बाद व्यक्ति विद्यालयों, शिक्षकों, अपने मित्र बन्धुओं तथा समाज से जीवन मूल्यों को ग्रहण करता है। मूल्यों की इस समस्त प्रक्रिया को साहित्य के माध्यम से सरलता से समझा जा सकता है। साहित्यकार अपने जीवन में जो देखता है, सुनता है, अनुभव करता है या जो शिक्षा समाज को देना चाहता है, उसे मूल्यों सहित अपने साहित्य में उतारने का प्रयास करता है। यदि कहा जाये कि - साहित्य वो समन्दर है जिसमें अनेक मोती रूपी मूल्य बिखरे पड़े रहते हैं तो अनुचित न होगा।

आवश्यकता इस बात की होती है कि मानव इन मोती रूपी मूल्यों को चुनकर स्वयं को सशक्त कर ले। प्रस्तुत शोधपत्र में भी यही दर्शाने का प्रयास किया गया है कि - हिन्दी साहित्य में अनेक जीवन मूल्य व्याप्त हैं जिन्हें अपनाकर व्यक्ति अपने जीवन का सर्वांगीण विकास कर सकता है।

कुंजी शब्द: जीवन मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, मानवीय मूल्य

हिन्दी साहित्य में जीवन-मूल्यों की झलक

हिन्दी साहित्य अत्यन्त विस्तृत है जो कि आदिकाल से आरंभ होकर आज तक अपनी अस्मिता को प्रतिष्ठित किये हुये है। हिन्दी साहित्य के अनेक महान् साहित्यकारों ने इसके अस्तित्व की बागडोर को बड़ी ही कुशलता से संभाला तथा अपने साहित्य की नदी से हिन्दी साहित्य के समुद्र को और अधिक विस्तृत तथा सम्मानित कर दिया। हिन्दी साहित्य की अनेक प्रतिष्ठित विभूतियों ने ऐसे जीवन मूल्यों को साहित्य में स्थापित किया जो कि न केवल भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में अपनी विजय का परचम लहराते दिखाई देते हैं। कबीर, सूरदास, तुलसीदास ऐसे महान् साहित्यकार हैं जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को मानवता का संदेश दिया। इनका साहित्य आज भी मानव हृदय में अपना गहरा स्थान निश्चित किये हुये है। साहित्य की कोई भी विधा क्यों न हो कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण जीवनी आदि सभी के माध्यम से हिन्दी साहित्यकारों ने जीवन मूल्यों के महत्त्व को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

(क) हिन्दी कविता में जीवन-मूल्य

‘कविता’ हिन्दी साहित्य की एक ऐसी विधा है जो कि जन-साधारण के हृदय को आनंद से, खुशी से, करुणा से भर देती है। कविता पढ़कर या सुनकर व्यक्ति प्रसन्नता से झूम उठता है। आज भी लोग कविता सुनना पसंद करते हैं। इसके अतिरिक्त एक सच्चा कवि यथार्थ परिस्थितियों को ही अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त करता है। इसी कारण कविता में वास्तविक जीवन मूल्यों का समावेश स्वतः ही हो जाता है। हिन्दी साहित्य में अनेक कवि हुये हैं जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठित करने का सफल एवं सराहनीय प्रयास किया है।

संत कबीर ने अपने काव्य में अनेक जीवन मूल्यों की स्थापना की है। गुरु के महत्त्व के विषय में कबीर कहते हैं -

”पाछै लागा जाई था, लोक वेद के साथ।

आगै थैं सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि” ॥1

मानव जीवन में गुरु का विशेष महत्त्व होता है, सच्चा गुरु ही मानव को जीवन में उचित मार्ग दिखा सकता है और गुरु का सम्मान करना मानवीय मूल्यों का अटूट हिस्सा है। कबीर द्वारा रचित साहित्य में इस मानवीय मूल्य को बड़ी आकर्षक एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

संत रविदास जाति-पाति की खोखली मान्यता पर प्रहार करते हुये कहते हैं -

”रविदास एक ही नूर में जिमि उपज्यो संसार।

ऊँच-नीच किस विधि भए, बामन अरु चमार” ॥2

संत रविदास जी कहना चाहते हैं कि - संसार में सभी का जन्म ईश्वर के माध्यम से ही हुआ है इसलिये जाति-पाति के आधार पर भेदभाव करना व्यर्थ है।

जयशंकर प्रसाद नारी के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहते हैं -

”क्या कहती हो ठहरो, नारी!

संकल्प अश्रु-जल से अपने

तुम दान कर चुकी पहले ही

जीवन के सोने-से सपने” ॥3

यहाँ प्रसाद जी ने वर्षों से अत्याचार सहन कर रही नारी को सांत्वना स्वरूप ये पंक्तियाँ भेंट की हैं साथ ही समाज को नारी के बलिदानों से परिचित करवाने का प्रयास भी किया है। नारी का सम्मान करना मानवीय मूल्यों का अभिन्न अंग है। प्रसाद जी ने यहाँ इसी मूल्य को उजागर करने का सफल प्रयास किया है।

निराला अपनी प्रसिद्ध कविता ‘विधवा’ में कहते हैं -

“वह इष्ट देव के मन्दिर की पूजा-सी,

वह दीप-शिखा-सी शांत, भाव में लीन,

वह क्रूर काल तांडव की स्मृति रेखा-सी

वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन -

दलित भारत की ही विधवा है” ॥4

यहाँ निराला जी ने भारतीय समाज में विधवा औरतों की दयनीय दशा को बड़े ही कारुणिक ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान की है।

रहीम प्रेम के विषय में कहते हैं -

”रहिमन“ धागा प्रेम को, मत तोड़ो चटकाय।

टूटे से फिर ना मिले, मिले गांठ पड़ जाये”॥5

यहाँ रहीम जी ने प्रेम व समन्वय के महत्व को उजागर किया है जो कि मानवीय मूल्यों का आधार स्तम्भ कहा जा सकता है।

नरेश मेहता अपनी रचना ‘संशय की एक रात’ में कहते हैं।

“हमें क्या कह कर पुकारा जायेगा?

राष्ट्र संकट के समय

मैं आक्रमण के साथ था

राज्य पाने के लिये”॥6

प्रस्तुत पंक्तियों में राम-रावण के युद्ध से पूर्व विभीषण के विचलित मन के भावों का व्यक्त किया गया है जिसके समक्ष एक ओर राष्ट्र है दूसरी ओर धर्म।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य के इन महान् कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से गुरु के महत्त्व, जाति-पाति का विरोध, नारी सम्मान, प्रेम, राष्ट्र भक्ति आदि जीवन मूल्यों को बड़े ही आकर्षक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

(ख) हिन्दी कहानी में जीवन-मूल्य

कहानी हिन्दी साहित्य की अत्यन्त प्राचीन विधा है। यह विधा लम्बे समय से लोकमनोरंजन का कार्य करती आई है। इसके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य के अनेक महान् कहानीकारों ने अपनी इन कहानियों में जीवन मूल्यों को बड़े ही साधारण ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान की है।

क्रम सं०	हिन्दी कहानीकार	कहानियाँ
1.	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	‘उसने कहा था’
2.	प्रेमचन्द	‘पूँस की रात’, ‘कफ़न’
3.	जयशंकर प्रसाद	‘आकाशदीप’ ‘गुण्डा’
4.	अज्ञेय	‘गैंग्रीन’
5.	भीष्म साहनी	‘चीफ की दावत’, ‘अमृतसर आ गया है’
6.	फणीश्वरनाथ ‘रेणु’	‘तीसरी कसम’, ‘रसप्रिया’
7.	कृष्णा सोबती	‘मित्रो मरजानी’
8.	अमरकान्त	‘डिप्टी कलेक्टर’ ‘हत्यारे’
9.	ज्ञानरंजन	‘घण्टा’ ‘बहिर्गमन’

मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानी ‘पूँस की रात’ में तत्कालीन सामंतवादी व्यवस्था तथा शोषक व शोषितों का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस कहानी से यह सीख मिलती है कि - भले ही मनुष्य गरीबी में रहे परंतु उसे स्वाभिमान से जीवन व्यतीत करना चाहिये।

कहानी का एक पात्र मुन्नी अपने पति को जमींदार का कर्जा उतारने के लिये पैसे देती है।

उदाहरण देखिये:-

“उसने जाकर आले पर से रूपये निकाले और लाकर हल्कू के हाथ पर रख दिये। फिर बोली - तुम छोड़ दो अब की से खेती। मजूरी में सुख से एक रोटी खाने को तो मिलेगी। किसी की धौंस तो रहेगी। अच्छी खेती है। मजूरी करके लाओ, वह भी उसी में झोंक दो, उस पर धौंस”।¹⁷

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा रचित सुप्रसिद्ध कहानी ‘उसने कहा था’ में प्रेम और त्याग के मूल्यों को बड़े ही सुन्दर ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

इस कहानी में हीरा सिंह नाम का सैनिक है। जब वो घायल होता है तो उस समय उसके हृदय में अपने देश के प्रति अगाध प्रेम उमड़ उठता है।

उदाहरण:-

“सब मनुष्य गाड़ी पर चढ़ गये और डॉक्टर उन्हें चिकित्सालय में ले गया। हीरा सिंह न गया। केवल उसने कहा, मैं अपना वचन पूरा कर चुका, अब मैं सुख से मरूँगा। हरनाम की माता ने भारत से चलते समय मुझसे कहा था - ‘बालक की रक्षा करना।’ वह कार्य मैं सफलता से पूरा कर सका। अब वह जन्मभूमि को लौट जायेगा। मेरा कार्य शेष न रहा। इतना कहते-कहते उसकी आँखें मुँद गईं”।¹⁸

फणीश्वरनाथ ‘रेणु’ द्वारा रचित प्रसिद्ध कहानी ‘ठेस’ में ग्रामीण कलाकार सिरचन के स्वाभिमान एवं सुहृदयता का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया गया है। वह एक कुशल कारीगर है परंतु छोटी जाति का व्यक्ति होने के कारण लोग उसका सम्मान नहीं करते।

एक उदाहरण प्रस्तुत है।

“सिरचन जाति का कारीगर है। एक-एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता। फिर कुच्चियों को रंगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त”।¹⁹

इनके अतिरिक्त सुरेन्द्र चौधरी, विश्वनाथ त्रिपाठी, विजयमोहन सिंह, जैनेन्द्र कुमार, यशपाल, मार्कण्डेय, निर्मल वर्मा, मन्नु भंडारी, शेखर जोशी, शैलेश मटियानी, दूधनाथ सिंह, अरुण प्रकाश, अखिलेश, संजीव, स्वयं प्रकाश आदि अनेक कहानीकार हैं जिन्होंने अपनी कहानियों में समाज का यथार्थ अभिव्यक्त किया है, इसके साथ ही कहानीकारों ने जीवन मूल्यों को भी अपने साहित्य में उजागर किया है।

(ग) हिन्दी नाटक में जीवन मूल्य

‘नाटक’ हिन्दी साहित्य की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं मनोरंजक विधा है। हिन्दी साहित्य के अनेक नाटककारों भारतेन्दु हरिश्चंद्र से लेकर जगदीश चंद्र माथुर तक ने भी अनेक उत्तम नाटकों की रचना की है जिससे जीवन के मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति अत्यन्त सरलता से होती है। ये नाटक सामान्य जनता का केवल मनोरंजन ही नहीं करते बल्कि ये उन्हें जीवन मूल्यों से अवगत करवाते हैं तथा उन्हें जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

हिन्दी साहित्य के महत्त्वपूर्ण नाटककार व उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं -

क्रमांक	लेखक	नाटक
1.	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	‘अंधेर नगरी’ ‘सत्य हरिश्चंद्र’
2.	जयशंकर प्रसाद	‘चंद्रगुप्त मौर्य’ ‘ध्रुवस्वामिनी’

- | | | |
|----|--------------------|--|
| 3. | धर्मवीर भारती | अंधा युग |
| 4. | मोहन राकेश | ‘आषाढ़ का एक दिन’ ‘आधे अधूरे’ ‘राजहंस’ |
| 5. | भीष्म साहनी | ‘हानूश’ ‘कबीरा खड़ा बाज़ार में’ |
| 6. | जगदीश चन्द्र माथुर | ‘कोर्णाक’ पहला राजा |

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित नाटक ‘अन्धेर नगरी’ में उन्होंने कम से कम शब्दों में अधिकाधिक मनोभवों, विचारों व यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान की है। उन्होंने अंग्रेजी प्रशासन द्वारा अपनाई गई अविवेकपूर्ण प्रणालियों का अत्यन्त भावपूर्ण चित्रण किया है। नाटक में एक स्थान पर इसके मुख्य पात्र गोबरधनदास को अंग्रेजी सिपाही पकड़ लेते हैं तो वो रो रोकर कहता है -

“हाय बाप रे! मुझे बेकसूर ही फाँसी देते हैं। अरे भाईयो, कुछ तो धरम विचारो! अरे मुझ गरीब को फाँसी देकर तुम लोगों को क्या लाभ होगा? अरे मुझे छोड़ दो”¹⁰

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित सुप्रसिद्ध नाटक ‘ध्रुवस्वामिनी’ नाटक में नारी जाति के स्वाभिमान की गौरवगाथा का अत्यन्त सजीव चित्रण किया गया है। ध्रुवस्वामिनी इस नाटक की नायिका है। वह अपने राजा रामगुप्त के अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह करती है और संपूर्ण नारी जाति का प्रतिनिधित्व करते हुये कहती है -

“कुछ नहीं, मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है, वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते”¹¹

भीष्म साहनी द्वारा रचित नाटक ‘हानूश’ में मानव जीवन की गृहस्थ परिस्थितियों को मानवीय मूल्यों में मिश्रित करके अभिव्यक्ति किया गया है। पारिवारिक परिस्थितियों को बड़ी ही बारीकी से उजागर किया है जो कि मानवीय मूल्यों का आधार होती हैं। नाटक के आरंभ में ही पादरी व कात्या की वार्तालाप होती है:-

कात्या: मैंने आज तक आपके सामने मुँह नहीं खोला, लेकिन अब मैं मजबूर हो गई हूँ। इस तरह से यह घर नहीं चलता।

पादरी: अब तुम बड़े अनादर और तिरस्कार के साथ अपने पति के बारे में बोलने लगी हो, कात्या।

कात्या: उसमें पति वाली कोई बात हो तो मैं उसकी इज्जत करूँ। जो आदमी अपने परिवार का पेट नहीं पाल सकता, उसकी इज्जत कौन औरत करेगी”¹²

आधुनिक काल के अनेक नाटककार उत्तम रचनाएँ रचकर मानवीय मूल्यों का महत्त्व व्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने वर्तमान की संघर्षपूर्ण परिस्थितियों को अपनी रचनाओं में बड़ी कुशलता से चित्रित किया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि - हिन्दी साहित्य में लेखकों ने अपनी रचनाओं में मानवीय मूल्यों अर्थात् जीवन मूल्यों की ही स्थापना की है। साहित्य की कोई भी विधा हो, लेखकों ने एक ओर सामाजिक यथार्थ को व्यक्त किया है तो दूसरी ओर जीवन मूल्यों को भी विशेष महत्त्व दिया है।

मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्र यथा - राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि में उन्नति तभी संभव है जब इन क्षेत्रों में मानवीय मूल्यों का पालन किया जाता हो। साहित्य ऐसा प्रकाशपुंज है जो कि एक ओर

वर्तमान सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करता है तो दूसरी ओर आने वाली पीढ़ियों का मार्ग भी प्रशस्त करता है। परंतु जब तक साहित्य में मानवीय मूल्य समाहित होंगे तभी तक वो साहित्य कहलाने योग्य होता है। सौभाग्यवश हिन्दी साहित्य मानवीय मूल्यों का वो विशाल भण्डार है जो कभी समाप्त नहीं हो सकता। माँ हिन्दी के अद्भुत व्यक्तित्व से परिपूर्ण ऐसे साहित्यकार हुये हैं जिनके साहित्य का मुख्य उद्देश्य ही विश्व कल्याण हेतु जीवन मूल्यों की स्थापना करना रहा।

सन्दर्भ सूची

1. स्नातक, विजयेन्द्र, रमेशचन्द्र मिश्र, कबीर वचनामृत पृ० 145
2. सिंह, सतनाम, गुरु रविदास की हत्या के प्रमाणिक दस्तावेज, पृ० 45
3. पाठक, वाचस्पति, प्रसाद निराला पंत महादेवी की श्रेष्ठ रचनाएँ, पृ० 96
4. मदान, इन्द्रनाथ, सम्पादक, निराला, पृ० 63
5. करीम, शबाना, सम्पादिका, रहीम दोहावली, पृ० 14
6. मेहता, नरेश, संशय की एक रात, पृ० 10
7. अभिताभ, वेद प्रकाश, प्रेमचन्द की प्रतिनिधि कहानियाँ, पृ० 129
8. लाल, मनोहर, संपादक, श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी उसने कहा था और अन्य कहानियाँ, पृ० 24
9. वेदालंकार, शारदा देवी, संपादक, सात श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ० 68
10. हरिशचन्द्र, भारतेन्दु, अंधेरी नगरी, पृ० 23
11. प्रसाद, जयशंकर, ध्रुवस्वामिनी, पृ० 23
12. साहनी, भीष्म, हानूश, पृ० 11